Jan-2019 ISSUE-IV, VOLUME-VII(I)

Published Special issue

With ISSN 2394-8426 International Impact Factor 5.682

Peer Reviewed Journal

Published On Date 31.01.2019

Issue Online Available At : <http://gurukuljournal.com/>

Organized &
Published By

Chief Editor,
Gurukul International Multidisciplinary Research Journal
Mo. +919273759904 Email: chiefeditor@gurukuljournal.com
Website : <http://gurukuljournal.com/>

INDEX

Paper No.	Title	Author	Page No.
1	Journey Towards Paper-Less Country	Vedanand Kishor Almast	1-3
2	Green Marketing --- Its Strategies	Dr. Aparna Abhay Ambekar	4-8
3	Conducting polypyrrole based thin film composites	Neeraja M. Haridas	9-19
5	A Fixed Point Theorem In Densifying Mapping	Satyendra Singh, Vinod Kumar, Ajay Kumar Sharma	17-19
4	Geography Resource and Meaning and Nature	Dr.Kailas V. Nikhade	20-23
6	भारत मी किसान आत्महत्यायें	Dr. Rakshit M. Bagde	24-27
7	चंद्रपुर व गडचिरोली जिल्ह्यातील शासकिय, निमशासकिय कर्मचाऱ्यांवर असलेला अतिरीक्त कार्यभार, त्यामुळे निर्माण होणारा व्यावसायिक ताण व त्याच्या दुष्परिणामाचा चिकित्सक अभ्यास	श्री संदेश देविदास सांनुले	28-30

भारत में किसान आत्महत्याएँ

Dr. Rakshit M. Bagde

Assistant Professor

प्रस्तावना -

आत्मघाती व्यवहार दुनिया में एक बड़ी समस्या है। भारत में आज किसान आत्महत्याएँ एक भीषण समस्या बनी हुयी है। जिसके परिणामस्वरूप किसानों के गुणवत्तापूर्वक जीवन पर बुरा असर पड़ा हुआ है। किसानों का आत्मघाती व्यवहार उनके परिवार, समाज और देश पर बुरा प्रभाव डालता है। द युनायटेड नेशन ऑन सस्टेनेबल डेवलपमेंट (UNCSD) के सर्वे के अनुसार सन 1997 से 2005 तक भारत में हर 32 वे मिनट में एक किसान आत्महत्या कर रहा है। नेशनल क्राईम रिकार्ड ब्यूरो (NCRB) के आंकड़े देखने पर पता चलता है की, 2015 तक किसानों की आत्महत्या में 42% की वृद्धि हुयी है। देश में 2014 तक हर दिन 15 किसान आत्महत्या कर रहे थे, जो मानविय दृष्टि से देखनेपर एक सोचनीय बात सिद्ध होती है। कई अध्ययनों ने विभिन्न स्तरों और पैमानों के आधार पर किसानों के आत्महत्या का अध्ययन किया हुआ है। भारत में कृषी संकट, बढ़ती उत्पादन लागत, आय की कमी, कृषी ऋण, कम उत्पादकता, बाजार की विफलता और पारिवारिक असमतोल के आधार पर आत्महत्या का अध्ययन किया हुआ है। इसमें कृषक की ऋणग्रस्तता को मुख्य कारण बताया गया है। राष्ट्रस्तर पर देखे तो यह पैमाना सच साबित हो रहा है। भारत में किसान आत्महत्या के कारणों में ऋणग्रस्तता का प्रमाण 20.6%, पारिवारिक समस्या 20.0% खेती संबंधित मुद्दे 17.2%, बिमारी 13.2%, और नशिले पदार्थोंका सेवन 4.4% है। राज्य स्तर पर अध्ययन यह बताता है की, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ में क्रमशः 57%, 46% तथा 37% आत्महत्या का कारण ऋणग्रस्तता रही है। नेशनल सैपल सर्वे आर्गनाइजेशन (NSSO) के आंकड़े बताते हैं की, भारत में 2013 से 52% फार्म हाऊसों की स्थिती अत्यंत खराब अवस्था में है।

शब्द कुंजी - किसान, आत्महत्या, भारत

अध्ययन का उद्देश - 1) किसान आत्महत्या के कारणों की खोज।

2) सरकारी योजना का प्रभाव।

आत्महत्या की व्याख्या -

आत्महत्या शब्द का पहली बार प्रयोग सर थॉमस ब्राउन द्वारा 1642 में तथा वाल्टर चार्लेटन द्वारा 1657 में किया गया। इनसायक्लोपेडिया ब्रिटानिका के नुसार 'आत्महत्या एक घातक परिणाम का कार्य है, जो मृतक के घातक परिणाम के ज्ञान और अपेक्षा के साथ किया गया कार्य है।'

हेमरीन-एनस्टेवेटेड (1988) के अनुसार, 'आत्महत्या एक गतिविधि है, जिसमें उद्देश के साथ कार्य शामिल है।'

मेरीयम वेबस्टर के अनुसार, 'स्वेच्छा से और जानबुझकर अपने स्वयं के जीवन को समाप्त करने की क्रीया है।'

किसानों की आत्महत्या के कारण -

भारत के संदर्भ में किसानों की आत्महत्या के लिये अनेकों कारणों की चर्चा अनेक विद्वानों ने अपने शोध प्रकल्पों में कीया गया है।

- 1) लागतों में वृद्धि - किसानों पर ऋण का बोझ खेती की लागतों की वृद्धि के कारण हो रहा है। वर्तमान में कृषि की लागतें 2005 की तुलना में चार गुणा बढ़ गयी हैं। बिजली, ए. एस. रासायन, कृषि उपकरण और कृषि श्रम की लागतें देश में दिनों दिन बढ़ती जा रही हैं, जिसे पुरा करना साधारण किसान के बस का नहीं रहा है।
- 2) कृषि ऋण - भारत में सावकारी तथा संस्थागत दोनों ऋणों का भार किसानों पर देखा जा रहा है। NCRB के आंकड़े बताते हैं कि, अकेले महाराष्ट्र में 1,293 आत्महत्या के पिछे ऋणग्रस्तता यह एकमात्र कारण था। कर्नाटक में यह 946 थी। 2015 के आंकड़ों से पता चलता है कि, महाराष्ट्र में हुयी 3,000 किसान आत्महत्या में से 2,474 किसानों ने केवल ऋणग्रस्तता के कारण आत्महत्या की है।
- 3) जल संकट - खेती की मानसून पर निर्भरता खेती विकास में रुकावट पैदा करती है। 2001 में महाराष्ट्र में सिंचाई का क्षेत्र लगभग 18% था। 2013-14 में भारत में कुल कृषि भूमि का केवल 4.7 - 14 % भूमि में ही सिंचाई सुविधा उपलब्ध करायी गयी थी जबकि आज केवल 34.5% क्षेत्र में ही देश में सिंचाई सुविधा उपलब्ध है।
- 4) छोटे किसानों की अधिक संख्या - भारत में छोटे और सिमांत किसानों की संख्या सबसे ज्यादा है।

वर्ग	भूमि धारक संख्या%
छोटे किसान	60%
सिमांत किसान	19%
बड़े किसान	7%
भूमिहीन	14%

स्रोत-www.kmwagri.com

सरकारी राहत -

2008 में कृषि ऋणमाफी और ऋण राहत योजना में 65,000 करोड़ रु. की लागत से 36 मिलीयन से अधिक किसानों को लाभान्वित किया गया। यह खर्च किसानों द्वारा लिये गये व्याज के साथ-साथ ऋण मूलधन के हिससे को लिखने के उद्देश पर किया गया। 2013 में भारत में सरकार ने आंध्रप्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक और केरल के किसानों के आत्महत्या वाले क्षेत्रों के लिए एक विशेष पशु क्षेत्र और मत्स्य पालन पैकेज शुरू किया। इस पैकेज का उद्देश किसानों के आय स्रोतों में विविधता लाना था। किसानों की आय और सामाजिक सुरक्षा में सुधार के बहुआयामी दृष्टिकोण के बावजूद केंद्र सरकार के अनुसार 2013 के बाद हर साल कृषि क्षेत्र में 12,000 आत्महत्या दर्ज की गयी। भारत में किसान आत्महत्या का दर 10% है। 1995-2015 के बीच पंजाब राज्य से 4,687 किसानों की आत्महत्या हुयी, जिसमें से अकेले मानसा जिले से 1,334 किसानों ने आत्महत्या की है।

मंजुनाथ रिपोर्ट के अनुसार, देश में पुरुष किसानों के साथ-साथ महिला किसानों की संख्या देश में बढ़ रही है। कुल किसान आत्महत्या में महिला किसानों का आत्महत्या दर 15% रहा है इसमें तेलंगाना में 36%, गुजरात 10%, तमिलनाडु 7%, बंगाल 7%, छत्तीसगढ़ 4%, कर्नाटक 4%, महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश में 2% महिला किसानों की आत्महत्या हुई है।

जाती के आधार पर हुये अध्ययन पर मंजुनाथ रिपोर्ट दर्शाती है की, आत्महत्या ग्रस्त किसानों में सबसे ज्यादा OBC वर्ग के 46% किसान थे। इसके बाद 29% जनरल, 16% S.C. , तथा 9% S.T. वर्ग के लोगों का समावेश था। S.C. तथा S.T. आत्महत्या ग्रस्त किसान सबसे ज्यादा अकेले छत्तीसगढ़ राज्य से थे। आत्महत्या करने वाले किसानों में आयु के आधार पर अध्ययन करने पर यह बात सामने आयी है की, आयु 31 से 60 वर्ग में आत्महत्यार्ये सबसे ज्यादा थी। इनमें से सबसे अधिक विवाहित थे, अविवाहितों की संख्या सिर्फ 9% पायी गयी।

भारत में राष्ट्रीय अपराध ब्यूरो ने 1995 से किसानों की आत्महत्या का रिकार्ड रखना शुरू किया है। 2014 में भारत के राष्ट्रीय अपराध ब्यूरो ने 5,650 किसानों की आत्महत्या की सूचना दर्ज की है।

सन 2015 में किसानों की आत्महत्या राज्य के अनुसार

राज्य	संख्या
महाराष्ट्र	3,030
तेलंगाना	1,358
कर्नाटक	1,197
मध्यप्रदेश	581
आंध्रप्रदेश	516
छत्तीसगढ़	854

स्रोत- NCRB 2015

देश में किसानों की आत्महत्या

वर्ष	संख्या
1995	10,720
1998	16,015
2002	17,971
2004	18,241
2010	15,964
2011	14,027
2012	13,754

2013	11,772
2014	12,360

स्रोत- NCRB

सन 2016 में अकेले महाराष्ट्र राज्य में 23,000 से अधिक किसानों ने आत्महत्या की है। हाल ही में देश की संसद में किसानों की आत्महत्या पर प्रश्न पूछा गया जिसके जवाब में देश के कृषि राज्य मंत्री पुरुषोत्तम खुराणा ने लिखित जवाब में कहा कि, '2015 तक की किसानों की आत्महत्या की रिपोर्ट उनकी वेबसाइट पर उपलब्ध है। 2016 के बाद की रिपोर्ट अभी तक प्रकाशित नहीं हुई है।' कृषि राज्य मंत्री का यह जवाब हमें बताता है कि सरकार किसानों की आत्महत्या पर कीतनी चिंताग्रस्त है। अगर भविष्य में भी भारतीय किसानों के प्रति सरकार का यही दृष्टिकोण रहा तो भारत में किसान क्रांति तथा अर्थव्यवस्था में अस्थिरता का माहौल बन सकता है। अब तक कि गयी सरकारी मदद किसानों की आत्महत्याओं को रोकने में ज्यादा सफल नहीं हो पायी है।

संदर्भ ग्रंथ सूची -

- [Aman Sidhu](#), [Inderjit Singh Jaijee](#) (2011)-“ Debt and Death in Rural India: The Punjab Story”, SAGE Publications Delhi.
- Gyanmudra (2007)-“farmer Suicide in India-dynamics and Strategies of Prevention”, National Institute of Rural Development, Hyderabad.
- Manjunatha A.V. & Ramappa K.B. (2017) – “Farmer Suicides-All India Study”, Agro-Economics Research Center, Institute For Social and Economic Change, Bengaluru 07.
- Mayer Peter (2011) –“ Suicide and Society in India”- Routledge/ASAA South Asian Publication Series
- Causes of Farmer Suicides in Maharashtra (2005)- Tata Institute of Social Sciences.
- National Crime Record Bureau <http://ncrb.gov.in>